श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा में संवेदना का नव्य प्रयोग
(मेरा बचपन मेरे कंधों पर के संदर्भ में)

संकाय-मानविकी

विषय-हिन्दी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा
की पी-एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तावित

शोध-प्रारूप

संकाय-मानविकी

विषय-हिन्दी

शोध निर्देशक

डॉ० आलोक प्रभात
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी-विभाग, एम०के० कॉलेज,
लहेरियासराय, दरभंगा
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोधप्रज्ञ :

जय प्रकाश कुमार
स्नातकोत्तर हिन्दी
पटना विश्वविद्यालय, पटना
यू०जी०सी० नेट
(एन०एफ०एस०सी०)
पैट क्रमांक– E2209062

- **शोध का विषय :–**

श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा में संवेदना का नव्य प्रयोग (मेरा बचपन मेरे कंधों पर के संदर्भ में)

- **प्रस्तुत शोध की प्रासंगिकता :–**

बीसवीं सदी के अंतिम दशक में दलित विमर्श का उदय होता है। दलित चेतना और संवेदना हिन्दी साहित्य में बहुत पुरानी है मगर एक आंदोलन के रूप में दलित साहित्य सिर्फ ढ़ाई दशक पुराना है। दलित लेखन के प्रारंभ में दलित आत्मकथाएँ सर्वाधिक चर्चित रहीं है। आत्मकथा में व्यक्ति के साथ समाज व परिवेश को भी समेटने की प्रवृत्ति होती है। स्वाभिमान को जगाने के साथ समाजिक विसंगतियों को उभारना भी दलित आत्मकथा का उद्देश्य है। जिसमें दलित जीवन की आशा-भावनाएँ, संघर्ष, संत्रास तथा घुटन इसके केन्द्र में है। इसमें कल्पना के वजाय यथार्थ, स्वपन की वजाय अकांक्षा महामानव के वजाय उत्पीड़ित मनुष्य को प्राथमिक मानने वाले अम्बेडकरवादी आत्मवृत स्वाभाविक रूप से शास्त्रीय भाषा के स्थान पर जिंदगी की भाषा का पक्ष लेते है। दलित लेखन की शुरूआत डॉ० भीमराव अम्बेडकर के आत्मकथा 'मेरा जीवन' से मानी जा सकती है। यह आत्मकथा 'जनता' पत्र के 6 नवंबर 1954 अंक में छपा था। इस आत्मवृतों के माध्यम से साहित्य की प्रकृति, उसका तेवर, उसका मिजाज बदलने का काम किया है। दलितों की जिंदगी में सभी आयाम सास्कृतिक, धार्मिक, शैक्षणिक, राजनीनिक, आर्थिक इन आत्मकथाओं में देखे जा सकते है। जो निम्न आत्मकथाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया जा सकता है।

समकालीन दलित लेखकों ने अपने जीवन के संघर्षों को 'आत्मकथा' में लिपीबद्ध करते है जिसमें आज के समय में मोहनदास नैमिशराय की आत्मकथा 'अपने-अपने पिंजरे' एक संवेदनशील युवक की आत्मकथा है। जिसका जन्म उत्तरप्रदेश की अपेक्षित चमार जाति में हुआ।

नैमिशराय की आत्मकथा 1995 ई० में प्रकाशित होती है परिणामस्वरूप इस आत्मकथा में गंभीरता है, आत्मपरिक्षण की वृति है तथा घटनाओं और व्यक्तियों को उनके संदर्भों के साथ समझ लेने की परिपक्व दृष्टि भी है। इस आत्मकथा की एक विशेषता यह है कि इसमें दलित जीवन के साथ गरीब मुस्लमानों के जीवन का भी चित्रण हुआ है। विशेषकर संप्रदायिक दंगों में गरीबी की, श्रमिकों की जो भयानक अवस्था होती है उसका भी सुक्ष्म रेंखांकन इस आत्मकथा की उपलिब्ध है। नैमिशराय जी इस समय की अपनी मानसिकता का चित्रण इन शब्दों में करते है:– "मैं अपने आप से विछुड़ता जा रहा था। अपना ही शहर बेगाना सा-लगने लगा, मेरे लिए वह शहर जैसे पिंजरा बन गया था।" इस आत्मकथा का दूसरा भाग 2000 ई० में प्रकाशित हुआ था।

ओमप्रकाश वाल्मिकी द्वारा लिखित आत्मकथा 'जूठन' का पहला संस्करण 1997 में तथा पहली आवृति 1999 में निकलती है। हिन्दी साहित्य के दलित आत्मकथाकारों में ओमप्रकाश वाल्मिकी का प्रमुख स्थान है। ओमप्रकाश वाल्मिकी की आत्मकथा 'जूठन' के हिन्दु धर्म में व्याप्त वर्ण व्यवस्था की परतों को जनमानस के सामने खोल कर रख दिया है। भारतीय समाज संस्कृति तथा शिक्षा व शिक्षक की विकृत मानसिकता को परत-दर-परत प्याज के छिलके की तरह खोल दिया है। आजादी के नशे में चूर जश्न मनाने वाले के लिए 'जूठन' से अच्छा 'तोहफा' और क्या हो सकता है?

गाँधी के बारे में वाल्मिकी जी लिखते है:– "अम्बेडकर को पढ़ लेने के बाद यह बात समझ में आ गयी थी कि गाँधी ने 'हरिजन' नाम देकर अछूतों को राष्ट्रीय धारा में नहीं जोड़ा बल्कि हिन्दुओं को अल्पसंख्यक होने से बचाया उनके हितों की रंक्षा की"

कंवल भारती के शब्दों में–

"दलित साहित्य वर्ण व्यवस्था में पीड़ित समाज की वेदना का शब्द का रूप है।"

मोहनदास नैमिशराय के शब्दों में–

"दलित साहित्य यानि बहुजन समाज के सभी मानवीय अधिकारों और मुल्यों की प्राप्ति के उद्देश्य से लिखा गया साहित्य है, जो संघर्ष से उपजा है। जिसमें समता और बंधुता का भाव है और वर्ण व्यवस्था से उपजे जातिभेद का विरोध।"

माताप्रसाद के अनुसार– "दलित साहित्य दलितोत्थान हेतु लिखा गया, एक ऐसा साहित्य है। जो भोगे हुए सच पर आधारित है। यह जमीन से जुड़े हुए दलित, शोषित, उपेक्षित, सर्वहरा वर्ग से संबंधित है जो दशा और दिशा को इंगित करता है।" जिसमें विद्रोह और उद्बोधन के साथ संवेदना जागृत करने की उर्जा है।

समकालीन दलित आत्मकथा लेखकों में एक नाम श्यौराज सिंह बेचैन का भी आता है। श्यौराज सिंह बेचैन दलित आत्मकथाकार है आत्मकथाकार अपने बीते हुए जीवन का मूल्यांकन करता है। एक व्यापक पृष्ठभूमि में जीवन का स्थान सुनिश्चित करता है, उनका जुड़ाव अपने परिवेश के साथ अटूट होता है। जब आत्मकथाकार अपने जीवन अनुभवों को लिखता है तो जीवन की त्रासदी को रचनात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करता है। जब यह कार्य दलित आत्मकथाकार करता है तो वह संपूर्ण दलित समुदाय के समाजिक को उजागर करता है। इसलिए डॉ० विमल थोराट ने दलित आत्मकथा को परिभाषित करते हुए लिखा है कि:–

"दलित आत्मकथन आज दलित समुदाय के विविध आयामों को अपने अंदर समेटकर शोषण के उस हर पहलू की एक समाजशास्त्रीय चिकित्सक की दृष्टि से चीर-फाड़ करके समाजिक व्यवस्था और अंतसंबंधों की पड़ताल करता हुआ दिखाई देता है। दलित आत्मकथनों में उपस्थित समस्या और उसका प्रश्न व्यक्तिगत संदर्भों में नहीं, बल्कि समुदायगत संदर्भों से जुड़कर उभरते है।"

इस परिभाषा पर श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा मेरा बचपन मेरे कंधों पर का मूल्यांकन करूँ, तो पाता हूँ कि यह आत्मकथा दलित समुदाय के विविध आयामों को अपने में समेटा

हुआ है। इसमें शोषण के हर पहलू की पड़ताल की गई है। इसमें उठाए गए प्रश्न व्यक्तिगत नहीं, बल्कि समुदायगत है। यह आत्मकथा सिर्फ बेचैन सर की ही नहीं, बल्कि संपूर्ण भारत के दलित वर्ग की कथा है। श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा सिगमंड फ्रायड के कथन से शुरू होती है और यह पाठक वर्ग को झकझोरते हुए यह सूनिश्चित करता है कि इसमें पिता के छत्रछाया का अभाव है और उस अभाव में पले एक संघर्षशील इंसान की आत्मकहानी है। वह कथन है–

"किसी भी इंसान के लिए बचपन में पिता के संरक्षण से बड़ी और कोई जरूरत नहीं हो सकती है।"

श्यौराज सिंह बेचैन ने पेट की और पढ़ाई की दोनों की लड़ाई लड़ी है। इस कार्य के लिए उन्होंने मजदूरी भी की है वह मजदूरी कैसी, तो ठेके की। उनके भरे पूरे बाग में वसंत आने से पहले माली गुजर गया था। आत्मकथाकार इस आत्मकथा में उनके अनेक करूण दृश्य प्रस्तुत करते है। कथाकार अपने पिता राधेश्याम के साथ नदरौली से धुर्रा प्रेमनगर बरात देखने अपने चाचा के कंधों पर बैठकर जाते है और जब लौट कर आते है तो अपना बचपन अपने कंधों पर लेकर लौटते है। यह दृश्य कितना मार्मिक है, उस बालपन पर क्या असर पड़ा होगा, आप सिर्फ महसूस कर सकते है। जब तक वह आपपर गुजरा न हो। इसलिए दलित साहित्य में भोक्ता का विशेष स्थान है। आत्मकथाकार ने स्पष्ट लिखा है– "मैं जब घर से गया था तो बारात देखने की खुशी में हँसता-खेलता चाचा के साथ कंधों पर सवार होकर गया था और अब पिता के चले जाने पर लौट रहा था तो मेरा बचपन खुद मेरे ही कंधों पर आ पड़ा था।"

आत्मकथाकार अपने परिवार के बारे में बताते है कि बड़े बाबा भागीरथ, छोटे बाबा गंगी और ताऊ बाबूराम, गाँव नंदरौली। कुल मिलाकर, घर आसहायों और अपाहिज कहने का सामर्थ बहुत कम में होता है। खासकर भारतीय समाज में। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में घर को गृहस्थ जीवन का स्वर्ग माना जाता है। परंतु कभी-कभी यही गृहस्थबोध जीवन को कलूषित कर देता है।

श्यौराज सिंह बेचैन को भोगी हुई हिकारत का पता है। वे कहते है कि– डॉ० मनुष्य की लाश का पोस्टमार्टम करता है। तो इज्जतदार होता है, भंगिन सफाई करती है तो वह दुत्कारी जाती है। चमार पशु की खाल उतारता है तो वह बहिष्कृत और अछूत बना रहता है। मैं यह कह सकता हूँ इसलिए जानता हूँ कि आखिर भोगी हुई हिकारत का असर और भूख में अभोज्य का स्वाद कैसा होता है। आत्मकथाकार की यह टिप्पणी एक संवेदनशील इंसान को अश्रुपुरित कर सकता है।

"देश के करोड़ों दलित बच्चों के तरह मेरा भी कभी जन्मदिन नहीं मना।"

आत्मकथाकार इस आत्मकथा में अनेक के प्रति संवेदना व्यक्त की है और अनेकों सवाल उठाए है।

सवाल देखिए :–

"वैसे तो हमारे चमार चुहड़ों की पूरी कौम मृतपराय बना दी गई उनके साधन सुविधाएँ, सम्मान रूपी प्राण तो धर्म वाली व्यवस्था ने कब के खींच लिए थे। उसका इतिहास कहाँ है?" श्यौराज सिंह बेचैन गरीबी और अभाव के कोना-कोना से वाकिफ है। उनकी आत्मकथा में वर्णित गरीबी भारत की गरीबी की कथा है। उनका मानना है कि अपने घर आँगन को देखकर आजकल भी वाल्मीकि और चमार फिर से गाँव से बाहर आ बसे है। हाशिए से बाहर , तब भी ये भूमिहीन थे और आज भी भूमिहीन है उनका मानना यह भी है कि सफल डॉक्टर सभी के लिए नहीं होते।

उन्होंने गरीबी का वर्णण करते हुए माँ के मुह से कहलवाया है कि–

"गरीब ने देश छोड़ाइदई।। मिली होइगी बड़ी जाति कू आजादी, हमे तो काम करी केउ रोटी नाय दई। छूआछूत नाय होती तो मैं कहूँ चाय बीड़ी की दुकान ही खोल लेती"

यह सच है कि दलित समाज में गरीबी और भूखमरी इतनी है कि वे विस्थापित होने के लिए मजबूर है। वह चाय बीड़ी बेचकर भी दो वक्त की रोटी जुटाने के लिए मजबूर है। उन्हें छूआछूत जैसी अमानवीय व्यवहार उनके जीवन नरकमय बना दिया है। श्यौराज सिंह बेचैन ने ग्रामीण कहाबत

के माध्यम से सवर्णों की दलित विरोधी मानसिकता को उजागर किया है। उन्होंने कहा है कि:– "पशुओं में गधा, पंक्षियों में उल्लू, जातियों में चमार" ये कहाबत हमारे प्रति सवर्णों की दलित विरोधी मानसिकता को उजागर करती है। यह एक दिन में तैयार नहीं हुई है, ये जख्म इतने गहरे है कि दर्द से तड़पने के बजाय सहन करने के अभ्यस्त हो गए है। सबकुछ स्वभाविक लगता हैं बर्दश्तगी ही हमारी नियति बन गयी है। ये अपशब्द हमारे टोलों के घर-घर में लगातार सुनने को मिलता है। सवर्णों के जुबान पर चढ़े ये शब्द चमार कैसे बर्दास्त करते रहे, यह अश्चर्यचनक है?

अतीत से गहरा रिश्ता श्यौराज सिंह बेचैन का है तथा अतीत निराला के तरह **"फूटी स्मित सीता-ध्यान-लीन राम के अधर, फिर विश्व-विजय भावना हृदय में आयी भर।"** और आचार्य रामचन्द्र शुक्त कहते हैं कि "अतीत मनुष्य जीवन का स्वपनलोक जैसा नहीं है बल्कि भयावह अतीत है।" लेखक कहते है कि ढ़ेरों सवालों के साथ आज मेरी स्मृति में वह भयावह अतीत कौंधता है। कितनी लंबी संघर्ष यात्रा के क्रम में जिन्दगी इस मुकाम पर पहुँची है, कहा नहीं जा सकता। जो सोने लायक नहीं था वहाँ सोया, जो पहनने लाइक नहीं था उसे पहना, और जो उसे खाने लाइक नहीं था उसे खाया।

श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा मेरा बचपन मेरे कंधों पर में बाल-श्रम, गरीबी, अशिक्षा, अंधविश्वास, स्त्री शोषण, दलितों के बीच ब्राह्मणवादी तत्व एवं दलितों के दलित शोषक ..... सब भी स्मृति यात्रा इस कथा का स्वरूप निर्धारित करती है।

श्यौराज सिंह बेचैन ने अपनी आत्मकथा में अपनी पाँच साल की उम्र से लेकर हाई स्कूल पास करने की यथार्थ अनुभव है।

- **शोध की आवश्यकता :–**

साहित्य में समाज का प्रतिबिंब झलकता है। समाज की तरह साहित्य भी गतिशील होता है। समाज में हो रहे परिवर्तन का साक्षी होता हैं। हिन्दी दलित साहित्य में आत्मकथन लेखन को

महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इन आत्मकथाकारों ने दलितों ने सवर्ण समाज द्वारा दी गई पीड़ा को भोगा है, उन्हीं का यथार्थ चित्रण है। सदियों की गुलामी, विषमता, अमानवीयता में जीने को बाध्य होने के बाद बदलते सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश के माध्यम से दलितों में जिस चेतना के बीज अंकुरित हुए है, उनका एक विहंगम दृश्य इन आत्मकथाओं में देखने को मिलता है।

दलित रचनाकारों ने समाज के उस वर्ग की दुःख दर्द, हँसी-खुशी, तथा जीवन के अनेक ऐसे पहलुओं को वाणी प्रदान की है, जिससे हजारों वर्षों से वंचित रखा गया है। साठ के दशक में दलित आत्मकथाओं का आना किसी क्रांति से कम नहीं था, पहले यह मराठी साहित्य में आया फिर यह हिन्दी साहित्य में आया, साहित्य में यह क्रांतिकारी परिवर्तन का दौर रहा है।

श्यौराज सिंह बेचैन का मानना है कि दलित साहित्य जीवन से रिश्ते रहे है, आन्दोलन उनकी उर्जा है। मेरी राय में वह जीवन उनका अपना है, उसे उन्होंने अपनी मर्जी से जीने की शुरूआत की, आखिर वे कब तक वे हिन्दू वर्ण की परम्पराओं तथा प्रयासों को औढ़ते-बिछाते रहते, कब तक वे सामन्तों पुरोहितो के सामने याचक बन खड़े रहते? देर से ही सही उन्होंने अपने फैसला स्वयं लिए। इस तरह से दलित आत्मकथाओं में 'सिद्दत' के साथ संघर्ष रेखांकित हुआ।

दलित आत्मकथाकार डॉ० जय प्रकाश कर्दम का कहना है– "समाज के जिस विद्रुप, वीभत्स, क्रुर और अमानवीय चेहरे पर गैर दलित लेखक पर्दा डालते आए थे और समाज जिस सच से साक्षत नहीं करना चाहता था, इन आत्मकथाओं में समाज के उस नग्न सच को बेपर्दा किया"

इन आत्मकथाओं में जीवन अनुभव तथा आपबीती के साथ-साथ हिन्दू सामाजिक व्यवस्था के पोल खोलने में दलित आत्मकथाएँ सफल रहीं है। दलित जीवन की पीड़ाएँ, असहनीय और अनुभव दग्ध है। ऐसे अनुभव जो साहित्यिक अभिव्यक्तियों में स्थान नहीं पा सकें। एक ऐसी व्यवस्था में हमने सॉसे ली है जो बेहद क्रुर और अमानवीय है। दलितों के प्रति असंवेदनशील है, इस प्रकार एक दलित साहित्यकार को अपनी आत्मकथा के लिए कई वर्ष तड़पना पड़ता है। उसे दूसरी

मानसिक वेदना से जूझना पड़ता है। 'जूठन' में इस मानसिक वेदना के खुलासे को देखा जा सकता है। 'अपने-अपने पिंजरें' के लेखक मोहनदास नैमिशराय आत्मकथा लेखन को दोहरा संकट मानते है। उनका कहना है कि– "दलित आत्मकथा लिखने के तो दोहरे संकट है। दलित कथाकार को पहले स्वयं अपने समाज, जाति, परिवार और रिश्तेदारों से जूझना पड़ता है। बाद में सवर्ण जाति के समीक्षकों से भी उलझना जरूरी हो जाता है। जो शालीनता तथा अश्लीलता की विपरीत शब्दाबलियों के बहाने ऐसे कथाकारों को कोसना कतई नहीं भूलते है।"

साहित्य समाज का दर्पण होता है अतः समाज में व्याप्त ऐसे घोर बिडम्बना का प्रतिबिम्ब साहित्य में होना आवश्यक है। प्राचीन समाज से लेकर आधुनिक काल तक दलित चेतना किसी न किसी रूप में विद्यमान थी। लेकिन इसकी व्यापकता आधुनिक काल में आकर एक साकार रूप धारण करती है।

जहाँ पर दलित समाज अत्याचारों के खिलाफ सघर्ष करता हुआ नजर आता हैं तथा साथ ही अपने अधिकारों की मॉग भी करता है। डॉ० अम्बेडकर ने जिन्होंने दलित साहित्य को विकास पथ पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उनकी पहल और समाजवादी विचारधारा ने दलित साहित्य को दिशा प्रदान की और एक अलग पहचान दिलवाई।

श्यौराज सिंह बेचैन ने अपनी आत्मकथा के माध्यम से दलित समाज की संरचना का जीवन्त चित्रण निहायत ही ईमानदारी से प्रस्तुत किया है। इस आत्मकथा में उनकें पांच साल की उम्र से लेकर हाई स्कूल पास करने तक के यथार्थ अनुभव है। शिल्प की दृष्टि से इस आत्मकथा में घटनाओं का दोहराव बहुत अधिक है।

- **शोध की महत्व :–**

श्यैराज सिंह बेचैन की आत्मकथा ('मेरे बचपन मेरे कंधों पर' के संदर्भ में) मानवीय संवेदनाओं के विभिन्न धरातल पर सृजित है। उन्होंने आत्मकथा के माध्यम से पीड़ित एवं मानवीय अधिकारों से पीड़ित वंचित वर्गों की वास्तविक स्थिति को समाज एवं परिचित कराने का प्रयास किया है। यह हमारे समाज का सत्य है। जो सामाजिक रीति-रिवाज की परम्पराओं एवं धार्मिक आवरण से दलित, वंचितों एवं अपेक्षितों को सदियों से शोषण होता चला आ रहा है।

श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा कई मार्मिक अन्त-कथाएँ कहती है– छुआछूत की कथा, उत्पीड़न को उलटने की द्वन्द्वात्मकता की कला और अपने शब्दों से एक आदर्श संसार की तलाश की यथार्थ कथाएँ, विभिन्न मार्मिक संवेदना को अपने आत्मकथा में उपस्थिति दर्ज कराने में सफल रहे।

साहित्यकार के रूप में श्यौराज सिंह बेचैन अपनी रचनाओं से दलित को प्रेरित करते हैं कि भाग्यबाद, नियतिवाद, रूढ़िवाद, कर्मफल, पुनजर्न्म जैसे पाखंडों से बचे और वैज्ञानिक तार्किक धारणों को बढ़ावें देते है। प्रस्तुत शोध-कार्य श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा के संवेदनाओं के माध्यम से समाज के वंचित, पीड़ित, उपेक्षित वर्गों की आवाज बनकर उन्हें न्याय दिलाने की पुरी कोशिश की है। ऐसी सामाजिक विसंगतियों को दूर करने में श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

- **पूर्वकृत शोध कार्य :–**

विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग में प्राप्त शोध सन्दर्भ के विभिन्न खण्डों के अवलोकन से ऐसा स्पष्ट होता है कि अब तक श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा पर कोई शोध कार्य संपन्न नहीं हुआ है।

पत्र-पत्रिकाओं में छिटपुट रूप में इन पर कतिपय आलोचनात्मक टिप्पणियाँ मात्र मिलती है और उसके अलावा मैं शोध गंगा, शोध गंगोत्री जैसी साइट पे भी अवलोकन किया तो वहाँ भी कुछ मुझे हासिल नहीं हुआ। तो इन सब बातें से मुझे लगता है कि श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा 'मेरा बचपन मेरे कंधो पर' काम किया जा सकता है।

- **शोध के आधार ग्रंथ :–**

'मेरा बचपन मेरे कंधों पर'– श्यौराज सिंह बेचैन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण- 2009

- **शोध की प्रविधि :–**

प्रस्तुत शोध "दलित आत्मकथा और श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा, 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' का मूल्यांकन" के अध्ययन में मैं आगमनात्मक और निगमनात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग करूँगा। इसके आलावा शोध कार्य को प्रस्तुत करने हेतु मैं विष्लेषणात्मक, आलोचनात्मक, वर्णनात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग करूँगा। आत्मकथा साहित्य की रचना प्रक्रिया को समझने हेतु साक्षात्कार प्रविधि का प्रयोग करूँगा।

- **शोध की परिकल्पना :–**

श्यौराज सिंह बेचैन ने अपने लेखन में दलित जीवन के कष्टों, यातनाओं, प्रताड़नाओं आदि की खुलकर अभिव्यक्ति की और सामाजिक बंधनों पर जमकर हमला बोला है। श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा की यह सबसे बड़ी विशेषता है कि इसमें केवल आत्मकथाकार का जीवन और उसकी निजी कथा ही नहीं अपितु उसमें एक पूरे समाज की कथा एवं व्यथा साथ-साथ चलती है। वे अपनी आत्मकथा में दिखातें है कि किस तरह दलित समाज अंधविश्वास में पूरी तरह जकड़ गया है श्यौराज सिंह बेचैन भी जाति और वर्ग के आधार पर भारतीय लोगों के उत्पीड़न, अंधविश्वास की मूल वजह अशिक्षा बताते है तथा उनकी आम भारतीय की अवधारणा केवल दलित समाज तक सीमित न रहकर एक पूरे शोषित, दलित, उत्पीड़ित तबके तक विस्तारित करते है। श्यौराज सिंह बेचैन ने दलित समाज और शोषित-उत्पीड़ित समाज का जैसा चित्रण किया है उसे आज के दौर में देखने और समझने की जरूरत है। प्रस्तावित शोध-कार्य में इस परिकल्पना के आधार पर अध्ययन कार्य किया जाएगा।

- भारत में दलित समाज की वीभत्स सच्चाई से रूबरूह होंगे।
- दलित बालक की यातना, उसकी संघर्ष गाथा के विभिन्न पहलुओं को जानेंगे और उस परिवेश का विश्लेषण कर सकेंगे, जिसमें एक दलित बालक कि पिता की मृत्यु के बाद खुद अपने जीवन का बोझ अपने कन्धों पर उठाता है।
- दलित समाज की संरचना जान सकेगें।
- दलित समाज की प्रगति में बाधक तत्वों का विश्लेषण कर सकेगें।
- दलित साहित्य के सन्दर्भ में इस कृति का महत्वपूर्ण योगदान समझ सकेगें।

- **अध्यायों का वर्गीकरण :–**

प्रथम अध्याय : आत्मकथा की अवधारणा और दलित साहित्य

दलित आत्मकथा की प्रकृति और स्वरूप

द्वितीय अध्याय : श्यौराज सिंह बेचैन की व्यक्तित्व एवं कर्तृव्य

तृतीय अध्याय : दलित आत्मकथा के परिप्रेक्ष्य में श्यौराज सिंह बेचैन की

आत्मकथा में संवेदना का नया धरातल

चतुर्थ अध्याय : श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा में जीवन की यथार्थ अभिव्यक्ति

पंचम अध्याय : भाषा और शिल्प का नया कलेवर

उपसंहार

शोध के निष्कर्ष और मौलिक मान्यताएँ

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का महत्व

परिशिष्ट :

संदर्भ ग्रंथ की सूची

साक्षात्कार

- **संदर्भ-ग्रंथ-सूची :–**

- **आधार ग्रंथ :–**

1) डॉ० श्यौराज सिंह बेचैन: ‘मेरा बचपन मेरे कंधो पर’, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण - 2009

- **सहायक ग्रंथ :–**

1) ओमप्रकाश वाल्मीकि: दलित साहित्य का सौन्दर्यशात्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण- 2014
2) रामस्वरूप चतुर्वेदी: हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास
3) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल: हिन्दी साहित्य का इतिहास, अनुपम प्रकाशन
4) डॉ० दिलीप राम: हिन्दी साहित्य का इतिहास, नोवेल्टी एण्ड कम्पनी
5) डॉ० श्यौराज सिंह बेचैन: युद्धरत आम आदमी
6) बजरंग बिहारी तिवारी: दलित साहित्य, एक अंतयात्रा नवारूण प्रकाशन, उत्तरप्रदेश
7) कंवल भारती: दलित साहित्य की अवधारणा, बोधिसत्य प्रकाशन
8) कंवल भारती: दलित विमर्श की भूमिका, इतिहासबोध प्रकाशन, इलाहाबाद
9) जयप्रकाश कर्दम: दलित साहित्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
10) डॉ० प्रमोद कोबप्रत: हिन्दी दलित साहित्य एक मूल्यांकन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
11) दलित चेतना : साहित्यिक एवं सामाजिक सरोकार, रमणिका गुप्ता, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली
12) आधुनिक साहित्य में दलित विमर्श, देवेन्द्र चौबे, ओरियंट ब्लैक स्वान, दिल्ली

- **शब्द-कोश :–**

1) हिन्दी साहित्य कोश, भाग-1 संपादक धीरेन्द्र नाथ शर्मा

2) हिन्दी साहित्य कोश, भाग-2 संपादक धीरेन्द्र नाथ शर्मा

3) वृहद हिन्दी शब्द-कोश, संपादक- कालिका प्रसाद, मंडल लिमिटेड, वाराणसी

4) विद्यार्थी हिन्दी शब्द कोश, संपादक- बिरेन्द्र नाथ मंडल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

- **पत्र-पत्रिकाएँ :–**
  - हंस
  - आलोचना
  - दलित-स्मिता
  - आजकल
  - समय सरोकार
  - युद्धरत आम आदमी
  - अन्य

शोध निर्देशक

डॉ० आलोक प्रभात
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी-विभाग, एम०के० कॉलेज,
लहेरियासराय, दरभंगा
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोधप्रज्ञ :

जय प्रकाश कुमार
स्नातकोत्तर हिन्दी
पटना विश्वविद्यालय, पटना
यू०जी०सी० नेट
(एन०एफ०एस०सी०)
पैट क्रमांक– E2209062